CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

6607

891.43

R. 143

My
Ramayan

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

Price -11-
6607.

ब्रह्मसार

Brahmasar.

PRATAP SINGH MUSEUM
Gl. No.
339
SRINAGAR.
SRINAGAR LIBRARY
No 2938

दीनदास प्रसिद्ध नाम मुन्शी राम नारायण

कृत

जिसमें

समस्त पुराणों का आशय विशेषकर ब्रह्म भेद अति रुचिर
इन्होंमें सुगम रीति से वर्णित है - पण्डित रामरत्न वाजपेयि केहारा शुद्ध होय

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापाखाना यन्त्रालय में मुद्रित हुआ

जूलाई सन १८७५ ई.

Bahsha Sastra
No: 6

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥अथ मंगलाचरण ॥दोहा॥ दीनसुखद जग दम्ब के चारुच-
२ रनहिय ध्याय । बन्दन रूप रघुराज को सुजस बुद्धि वर पाय ॥१॥ अथ भूप रघुरा-
ज सिंह जी को प्रताप वो सुजस वो कीर्ति वर्णन ॥दोहा॥ धरा धरा धरतैंअ-
धिक धनि श्रीधर नभ कीन। सोन्नप कीरति करणको कलित कंज कवि दीन ॥२॥ क-
ढत परिघ रघुराज के उठहिं परिघ अकुलाय । कँपहि परिघ भातुर चलहिं रिपु दल
परिघ पराय ॥३॥ वेद विदित श्रुति नीत युत सकल भूप सुभ काज । महाराज रघुराज को
राज भनहु रघुराज ॥४॥ अयन पुनि अब होइ हैं जग विभूति श्रोतार । कलि में धनिर-
घुराज सो प्रभुताजासु अपार ॥५॥ सुधजन बोधन हेतु तैं भाषो व्यास पुरान । भूपति
भाषा जगत को हरत कुमति अज्ञान ॥६॥ ग्रंथ नाम रसावली रूप कृत अमित अपार।
जातैं जग में होतु है धनि धनि धर्म प्रचार ॥७॥ कवित्व ॥ आला धर्म साला हरि धाम-
रचे ग्राम ग्राम ठाम ठाम बाग औ तड़ाग बर बावली । आवैं गुन मान दान मान तौ अपार
लखि आनन्द बढ़ाय बुध बाँचे बिरदावली ॥ पावैं सुख हार जाके सज्जन सुसंत आय हरि
गुन गाय ध्यावै स्वरति हरि साँवली । कीरति अनन्य धन्य भूप रघुराज तेरी भौ सरी जहाज-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ग्रंथ राम रत्नावली ॥८॥ सुनु अधर्म अभिमान अधिकानो कलि पाप हरि लीन्हो है सुमति नर वृंद की । कोऊ पढ़ि पासी सुआसी निहारैं सुख चाहनो न जाहि प्रभु पद अरविन्द की परम अनूप भूप भक्ति अनुराग दीन प्रीति जिमि पद्म पराग पैं अलिन्द की । धर्म केज हाज राव राजन के सिरताज धन्य रघुराज लाज राखी बेद हिन्द की ॥९॥ ब्रह्म वैवर्त बिष्णु वामन वराह ब्रह्म अग्नि मारकण्डे औ भविष्यत सोहानो है । लिंग शिव नारद स्कंध पद्म भागवत कूर्म ब्रह्माण्ड मत्स गरुड़ बखानो है ॥ व्यास कृत सकल पुरान को प्रमान दीन तीन लक्ष सहस सतासी जग जानो है । ताको सार सुखद सुधा सो कादि रघुराज अंबु निधि आनन्द अगार ग्रंथ भानो है ॥१०॥ कोऊ दोंहैं स्वहरि लीन तन कोऊ भये दीन कोऊ लीन्हो हरि राज सुराज को । सहज समीप प्रभु पावैं सुख साज कोऊ पढ़ि पढ़ि चरित पुनीत वृजराज को ॥ यज्ञ जप दान बहु बिद्या के निधान भूप राखे राजहिन्द मैं नकाजयमराज को । ज्ञान अधिकात कलि कलुष नसात सुनि सास्त्र श्रुति बेद भाषा ग्रंथ रघुराज को ॥११॥ उदित दिगंतन में कीरति बिमल भूप उपमा मरीची चन्द मंद कैसे दीजिये तपत प्रताप निशि बासर अखंड तासु तासु समतादै दिवाकर तैं न कीजिये ॥ चौपै श्री रु

बेकौन आवै काज काहू सम तोपै नाम लैलै कहा ताको दाप्य दीजिये। भूप रघुराज दीन-
नाएँ फल दायक तौ नाम अंतरिक्ष कल्पतरु कौन लीजिये ॥१२॥ सुजस सुधा सो धन्य-
भूप रघुराज तेरो सुनद मही में जिमि वारि वसतु है। सोई है धवल धार भगटे पुनीत
तीन तीनो लोक बीच जासु सोभा सरसतु है॥ दायक अनन्द अम्बुनिध में मिल्यो है
जाय जाहि पुन्य पूरब तें नर परसतु है। सोई सुखकन्द जगवन्द मन्द मन्द कीट पूरन
कला तें बनि चन्द दरसतु है ॥१३॥

॥ दोहा ॥

कलिन्द्र पविक्रम भोज की करै प्रशंसा कौन। मिल्यो जाहि रघुराज को धनिकुबेर सो धौन १४
लिख्यो न जासु कल्लाट में सुख संपति विधि बाम। लहैं दाहिनो भूप तें श्री सुरेश अभिराम॥१५
मंगल में महिपाल को दरस लाभ जेहि होय। दीनता सु ताप अरु पाप जात सब खोय ॥१६॥
दृप्त गर्व सब कविन के दूर रचना सुभ दीन। नवलहैं तिन कहँ जानिये विपुल ग्रंथ जिमि कीन १७
कहैं दैं सदा अति प्रेम तें हरै चित्त अभिराम। कोमल चित जाके बसै सुन्दर मूरति धाम॥१८
हिन्द नृपति स्वारथ लगे महाराज रघुराज। सहज सुयस जिहँ जग लियो करि परमारथ काज १९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बेदबचन संसार हित बिदित कियो महिपाल । हरषि सुजन हरि लेतु हैं लघु भ्रम पुर सुरपाल ॥२०
कोमल चित कोमलबचन दया रूप रघुराज । जगजस तौ तौलौं बढ़ै जौलौं रवि द्विज राज ॥२१
रवि सम भूप प्रतापलखि हृदय कमल हरषात । हीन छीन मकुचात पुनि जिमि कुमुदलजात ॥२२
हीन मोतिन भूषन निभूषित द्वार मतंग । ॐ । कर दिनकर कबि देत जिमि मेघ श्याम के संग ॥२३
करत बिदित तिहुँ लोक में निज कीरति जिमि गंग । ललित कलित हिय प्रेम तैं दीरघ चरित्र के संग ॥२४
रन महँ रूप रघुराज कौं जीति सकै जग कौन । ॐ । पद पादन रघुबीर को जासु हृदय गृह भौन ॥२५
नहीं दियो औरहि श्रमी मथि सागर सुरलोग । सुधा सुयस रघुराज को हरत जगत भो रोग ॥२६
कनक मूठि मणि मैल सै रूप करकी करवाल । तची तड़ित के ताप की लखि रिपु हौं हैं बिहाल ॥२७
थापस्यो श्रुति बेद की धर्म भूपति के राज । ॐ । रंजपानक अज्ञान ना हरहिं सदा रघुराज ॥२८
जल निधि खारो तैं कढ़े सगन जोति द्विजराज । ह्वै कायद्युति रैन दिन सुयस चन्द रघुराज ॥२९
गगन अवनि पाताल मैं पूरित जस महिपाल । घुमत रक्षक कवनि नम दाहिन दिगपाल ॥३०
अस्त जेहि दरबार मैं सदा सुजन अधिकाय । रंजबदै रघुराज को सुयस रहै जग छाय ॥३१
जदकीमै सब चरन के आदि बरन एकदाम । जसजुत धनि रघुराज के मिलै दीन मनकाम ॥३२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

॥कवित्त॥ जानोजात भाल अकबालतैं सिकन्दर सो अरुनो प्रेम सो सोलंकित कतु अस्त्रमें। बि-
द्यातैं सुरगुरु सो बिबुध बखानैदीन रुस्तम सो शरजानैजाहि अम्दल में॥ हुकुमतैं नादिर अ-
रुहिम्मततैं हातिम सो तपत प्रताप धन्य जासु महितल में। गुनतैं बिचारि जाहि जगमैं अनेक
जानेसो गुन सोहाने रघुराजबेबदेल में॥ ३३॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥

॥अथ ब्रह्म वर्णन॥ दोहावली॥

अलख अनादि अनूप हरि ताहि लखैं जग कौन। ब्रह्म भेद वर्णन करौं धारचल थीरेन॥ ३४॥
यावत जंगम जीव अरु अस्थावर कीवदीन। सब मैं धनि प्रभु आपनी प्रभा प्रकासित कीन॥ ३५॥ कर्म धर्म निज बरन को गहहु बेद की रीति। फल अरपन हरि कहँ करहु गहि निष्चे अरु प्रीति॥ ३६॥ हृदय बिमल करि कीजिये इन्द्रिन कहँ बसदीन। सिद्धि होहिं साधन सबै जिमि ज्ञानिन बहु कीन॥ ३७॥ प्रथम बिराग बिबेक पुनि समदम दच्छा मोच्छ। या-
हिकर्म साधन कहैं जानि बरहु अबलच्छ॥ ३८॥ निकसे जब अहि ब्रह्मतैं तत्वंईयतर
जीव। माया दच्छा ब्रह्म कीजैसे पय महँ घीव॥ ३९॥ तेहि माया के तीनि गुन जानहिं सं-
त सुजान। सतरज तम हैं भांति बली तिनको देहुँ प्रमान॥ ४०॥ माया एक सतो गुनी जगत

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सुलच्छन होय। जानहु ताकहँ रूप हरि सकल धर्म किय सोय ॥४१॥ माया सोई सतोगुनी जाकी
७ सक्ति अनंत। हरि प्रेरक विधि होतु हैं जानहिं सिगरे संत ॥४२॥ माया जीवत मोगुनी ज्ञानिन।
कियो विचार। जो नहिं जानत आप को भूले जगव्यौहार ॥४३॥ ईश्वर के बन तीन हैं कारन सूक्षम
थूल। एथक रूप तिनके कहौं जासँ कछुक न भूल ॥४४॥ आदि अन्त जाको नहीं कारन कहिये सोय।
सूक्षम पाँचौं तत्व पुनि जानत हैं सब कोय ॥४५॥ नाम तत्व महि पवन अरु अनल अम्बु आ-
काश। सो मिलि रूप बिराट हरि बुध जन करहिं प्रकाश ॥४६॥ नभ सिर सूरज नैन ससि चरन
जासु पाताल। श्रवन बदन जग उदर विधि हृदय दास जमकाल ॥४७॥ ऐसे भये बन अस्थि
सिर चरन जासु पाताल। स्वासा पवन सु ध्यावहीं सुनर मुनि महिपाल ॥४८॥ तन बिराट हरि को र-
हे जौलौ रसट बिरंच। नख तन जाके ध्यान तें पाप रहत नहिं रंच ॥४९॥ त्वंपद जीवत मोगुनी
माया बस महदीन। सात्विक तामस राजसी तातें कहहिं प्रवीन ॥५०॥ जब किय ज्ञान बिचार तें
बिमल बुद्धि है जाय। ताहि सतोगुन जानिये तम अज्ञान नशाय ॥५१॥ जहाँ लोभ ब्यवहार है।
ताहि रजोगुन खानि। आलस निद्रा मूढ़ता मोहत मोगुन खानि ॥५२॥ भ्रमित सदा संसार में
सुधि अपनी बिसराय। जीव सच्चिदानंद है विकल तमोगुन पाय ॥५३॥ माया एक सतोगुनी कि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वा जाको नाम जो सब अपने बस कियो भाव जासु अभिराम ॥५५॥ माया बुद्धि तमोगुनी प्रेम
सो गुन जानि । जाहि अविद्या कहतु हैं लीजै सो पहिचानि ॥५६॥ पंच कर्म अरु पंच पुनि
ज्ञानेन्द्री बिलगाय । पाँचहि अन्तस्करन के भेद कहौं समुझाय ॥५७॥ ये पन्द्रह मन बुद्धि मि-
लि है सबद एक तीर । जामैं लक्षित होतु है सुन्दर सकल शरीर ॥ ५८ ॥ बोल निकर पद लिं-
गगुद कर्मेन्द्री पहिचान ॥ त्वचा नैन नासा बुद्धि रसना करन सुजान ॥५९॥ प्रान अपान स-
मान हैं अरु उदान उड्यान । भेद सु अन्तस्करन के बुधजन करहिं बखान ॥६०॥ बोलनि अ-
वन अकाश है कर अरु त्वचा समीर । चरन नैन हैं अनल अरु रसना लिंग सुनीर ॥ ६१ ॥ गुदा ना-
सकैं द जानिये अवनितत्त्व धुव दीन । सारसुखर बेदान्त को बिनु अमलन कहिं प्रवीन ॥६२॥
प्रानतत्व आकाश है पवन अपान हि जानि । अम्बुतत्व उड्यान को जानहु अनल समान ॥
॥६३॥ अवनि उदान हि जानहीं साधक भर्मनषाय । सोधहि जाके हैं जोग बल बुधजन म-
निसहषाय ॥६४॥ पंच प्रान भूतात्म गभये रजो गुन पाय । निरो ताको करतु हौं हिय आनं-
द अधिकाय ॥६५॥ संत रजो गुन तैं कहैं पंच प्रान अनुमान । जाहि कहहिं भूतात्मा
दैवबंद प्रमान ॥६६॥ मन अरु बुद्धि सो गुनी भाषहिं जोगी लोग । सो प्रानन संगकर-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तुहैं जग सँह दुख सुख भोग ॥ ६६ ॥ सोई पुनि भूतातमा संचित कर्महिं पाय। भोग करे तन धारि जग मिथ्या सत्य बनाय ॥ ६७ ॥ त्वचा नादिका रोम अरु मान्स अस्थि तन मांह। अवनितत्व भुव जानिये देखि बेद नर नाह ॥ ६८ ॥ रेतापित्त प्रस्वेद अरु रुधिर लार जल अंश। भमा नीद आलस क्षुधा प्यास आदिन को वंस ॥ ६९ ॥ धावनि कूदनि चलनि अरु सकुचपसार नि शक्ति। पवनतत्व वै मानही जाके हियहरि भक्ति ॥ ७० ॥ शीस कंठ अरु उदर कटि हृदय अंश आकाश। पुनि बिभाग सब तत्वको प्रमुदित करहु प्रकाश ॥ ७१ ॥ जीव सकल जोहित त्वके आधो गुन निज लेत। एक एक गुन ओर लै सुतन देखाई देत ॥ ७२ ॥ जैसे पक्षी उड़तु है पवनतत्व नभ माँह। अम्बुतत्व जिमि मीन गति है जल मैं नर नाँह ॥ ७३ ॥ मानुष अरु पशु आदि दै अवनि तत्व भुव जानि। याही बिधि सब तत्वके जीव लेहु पहिचानि ॥ ७४ ॥ जीव आपने तत्व मैं सुखी रहत नितदीन। अन्य तत्व अंसमें तैं दुखी होत अरु षीन ॥ ७५ ॥ संचित औ क्रिय मान पुनि प्रारब्ध के कर्म। सुजन संत पर बोध हित कहहुँ तासु सब धर्म ॥ ७६ ॥ संचित ताकँह कहतु हैं जाके हेतु सुजान। लेन परै गो जन्म जग मानहु बचन प्रमान ॥ ७७ ॥ इच्छा बिनु इच्छा बहरि पर इच्छा कछु पाय। तन दुख सुखकँह जानिये

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पराख्य फल भाय ॥७८॥ बुरो भलो नर करतु है कर्म सोई क्रिय मान। हरे मरन मैं जीव
हीं जाहि मुक्ति प्रमान ॥७९॥ सत्य कहौं दृढ़ जीव कैं दृढ़ सदान चावत कर्म। तातैं गौ-
गुन त्यागि सबलीजे पंथ सुधर्म ॥८०॥ जाते चित अज्ञानता तुरित दूरी है जाय। है कि
रतारथ जीव जग आपुहि ब्रह्म लखाय ॥८१॥ धनि माया हरि की प्रबल तन असत्य पारे
नाम। सबै सत्य सो लखि परै बिसरि जात हरि नाम ॥८२॥ षट विकार परतच्छ तन जानत
हैं सब कोय। जन्म मरन बहिबो जुवा वृद्ध बाल चित होय ॥८३॥ थिर तन महँ दस रोष
दृढ़ प्रगट देखाई देत। एक असोच असिध्य पुनि मरत जन्म फिरि लेत ॥८४॥ कृत स-
हाँ दुरग्रन्थ अस खंड खंड सब देह। सिथिल थूल रोगी बहुरि आमिष आसन तेंह
॥८५॥ हे अशेष ब्रह्म आतमा सर्व शक्ति चैतन्य। ताकैं हजे पहिचान हीं जीवन ताको
धन्य ॥८६॥ अनु कछु चैतन्य नहिं ताको देहु प्रमान। इन्द्रिन सँग तन महँ सैन माँह
इक थान ॥८७॥ चीर उतारहि बसन तन जानि परै नहिं ताहि। तातें कछु चैतन्यता आनहु
कहँ नहिं आहि ॥८८॥ इन्द्री जानत स्वाद निज औरन मैं गति नाहिं। मन हुँ जहाँ चैतन्य-
हिं तौ कर्म भर्म नसाँहि ॥८९॥ मन गति इन्द्रिन लौं रहै जानत है जड़ जाहि। बिनु सहाय इन्हीं के

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ककुक शक्ति नहिं ताहि ॥ ९०॥ तातैं मन दृष्टवर नहीं तजहु मूढ़ अज्ञान । लखहु तुरिय ब्रह्म-
११ तमा तजि कारण मन मान ॥ ९१॥ अहंकार मन बुद्धि चित चारि नाम वपु एक । भेद सुअन्तःकरन के बुध जन करहिं विवेक ॥ ९२॥ जानत है जँह आप को अहंकार सो जानि । निपचे करै जो और की बुद्धि लेहु पहिचानि ॥ ९३॥ तातैं मन अरु बुद्धि तन एक रूप है दीन । अहंकार अरु चित्त कहँ एकहि लखहि प्रवीन ॥ ९४॥ देहँ परेंद्री लखहु तासु परैं मन न होय । बुद्धि परे ताके भई कहा दृश्याने लोय ॥ ९५॥ तासु परे धनि आत्मा तन महँ राजत दीन । ताके बिमल प्रकाश तैं होहि तमोगुन छीन ॥ ९६॥ बिसे भोग इन्द्री करैं । सुतन थूल जग पाय । पावहिं सुख सब स्वाद को मन अरु बुद्धि बनाय ॥ ९७॥ अग्नि पद कहँ जल जानिये तत पद सिंधु प्रमान । त्वं पद मानहु बुन्द है तीनो एक समान ॥ ९८ अज्ञा संतन तैं कियो ब्रह्म निरूपन दीन । बुध जन ताहि सुधारि हैं जानि मोहि मति हीन ॥ ९९॥ कवित्व ॥ आयो दल कमल पैं बिकल तमोगुन तैं मन अरु बुद्धि । बद्ध कौतुक लखायो है । देखे रंग कर्म धाय सँग सब इन्द्रिन के चैन चित चंचल । मैं नेकु नहिं आयो है ॥ पूरन भई है दीन आसा पुन्य पूरब तैं पास उदार हार दीना

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नाथ पायो है । भूप रघुराज रूप मुखद सतोगुन सो सत्य सत्य असत्न सत्न सो
हायो है ॥१००॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥
॥ इति श्री पुस्तक ब्रह्मसार दीन दास कृत प्रसिद्ध नाम मुन्शी राम नारायण अवध वासी ॥
॥ शुभमस्तु समाप्तः ॥
॥ लिखितं महाबीर प्रसाद ब्राह्मण अवध वासी ॥
॥ ॥ संवत १९३१ ॥ ॥ ॥

6607.
CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri